प्रकाशनार्थ

पटना, 25 सितम्बर। कला प्रेमियों, विशेषकर महिलाओं के लिए बहुत अच्छी खबर है। एडीआरआई (ADRI) के एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टिट्यूट के जेएसएस (JSS) और ईआईएसीपी-सीएसईसी (EIACP-CSEC) के संयुक्त सहयोगात्मक जागरूकता कार्यक्रम में यह घोषणा की गई कि एडीआरआई 8 अक्टूबर से लगभग 10 दिनों तक *सिक्की कला* का प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षकों की व्यवस्था कर रहा है।

सिक्की कला बिहार की पारंपरिक और जीआई टैग प्राप्त बहुप्रशंसित हस्तकला है, जिसमें सुनहरी रंग की सिक्की घास का उपयोग कर टोकरियाँ, चटाइयाँ, चित्रमय कलाकृतियाँ आदि जैसी परिष्कृत और पर्यावरण-अनुकूल वस्तुएँ बनाई जाती हैं। भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoECC) इस तरह की पहलों को एडीआरआई जैसी संस्थाओं के माध्यम से बढ़ावा दे रहा है ताकि सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त किया जा सके। सिक्की कला से जुड़कर लोग अच्छा रोजगार प्राप्त कर सकते हैं और एडीआरआई प्रशिक्षुओं को उनके बनाए गए उत्पादों के विपणन में भी सहयोग करेगा।

कार्यक्रम के दौरान ईआईएसीपी-एडीआरआई की समन्वयक **मौसमी गुप्ता** ने सभी का स्वागत किया, जिसमें बड़ी संख्या में जेएसएस प्रशिक्षु उपस्थित थे।

यह आयोजन *स्वच्छता पर्व* के तहत किया गया, जो स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए दो सप्ताह तक चल रहा है। इसमें Apiculture (मधुमक्खी पालन) और हाइड्रोपोनिक्स जैसी अन्य क्षेत्रों में भी प्रशिक्षण देने की योजना है। इस अवसर पर एडीआरआई सदस्यों के लिए *पर्यावरण बचाओ* विषय पर एक चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में **संदीप कुमार, निदेशक, जेएसएस; डॉ. सुनील गुप्ता, गुलशन पटेल और सीएसईसी की सुश्री पूजा कुमारी** ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(Abhishek Prasad)